संब्योविव /पानीपत / 66-84 / 26679. — चूं कि हरियाणा के राज्यपाल की राये है कि मैं० (1) नैजनल फर्टीलाईजर लि॰, पानीपत, (2) श्री राम ईन्टर प्राईजिज नैजनल फर्टीलाईजर लि॰ पानीपत के श्रीमक श्री टी॰एन॰ पाठक तथा उसके प्रबन्धकों के मध्य इसमें इसके बाद लिखित मामले में कोई ग्रीहोगिक निवाद है:—

ग्रीर चूंकि हरियाणा के राज्यपाल विवाद को न्यायनिर्णय हेतू निर्दिष्ट करना वांछनीय समझते हैं;

इस लिए, ग्रब, ग्रौद्योगिक विवाद ग्रिधिनियम, 1947 की धारा 10 की उपधारा (1) के खण्ड (ग) द्वारा ग्रदान की गई ग्रावितयों का प्रयोग करते हुये, हरियाणा के राज्यपाल इसके द्वारा सरकारी ग्रिधिसूचना सं 3(44)84-3-श्रम, दिनांक 19 ग्रप्रैल, 1984 द्वारा उक्त ग्राधिनियम की धारा 7 के ग्रधीन गठित श्रम न्यायालय, ग्रन्बाला को विवादग्रस्त या उससे संबंधित नीचे लिखा मामला न्यायानिर्णय के लिये निर्दिष्ट करते हैं, जो कि उक्त प्रबन्धकों तथा श्रमिक के बीच या तो विवादग्रस्त मामला है या विवाद से सुसंगत ग्रथना संबंधित मामला है:—

क्या श्री टी 0एन 0 पाठक की सेवाग्रों का समापन न्यायाचित तथा ठीक है? यदि नहीं तो वह किस राहत का हकदार है ?

ग्रौर चुकि हरियाणा के राज्यपाल विवाद को न्यायतिर्णय हेतु तिर्दिष्ट करना वांछनीय समझते हैं:--

इस लिए, ग्रंब, ग्रौद्योगिक विवाद ग्रिधिनियम, 1947 की धारा 10 की उपधारा (1) के खण्ड (ग) द्वारा प्रदान की गई ग्रिकियों का प्रयोग करते हुए, हरियाणा के राज्यपाल इसके द्वारा सरकारी ग्रिधिसूचना सं.3(44)84-3-श्रम, दिनांक 19 ग्रुप्रैल, 1984 द्वारा उत्त ग्रिधिनियम की धारा 7 के ग्रिधीन गठित श्रम न्यायालय, ग्रम्बाला को विवादग्रस्त या उससे संबंधित नीचे लिखा मामला न्याय-निर्णय के लिये निर्दिष्ट-करते हैं, जो कि उक्त प्रबन्धकों तथा श्रीमक के बीच या तो विवादग्रस्त मुमला है या विवाद से सुसंगत ग्रथवा संबंधित मामला है :---

क्या श्री राज पाल की सेवाग्रों का समापन न्यायचित तथा ठीक है ? यदि नहीं तो वह किस राहत का हकदार है ?

सं०ग्रो०वि०/यमुना/46-84/2669 2.—चूं कि हरियाणा के राण्याल की राये है कि मैं० प्रकाश प्रोडेक्ट, छछरौली गेट, जगाधरी के श्रमिक श्री हरदेव कुमार तथा उसके प्रबन्धकों के मध्य इसमें इसके बाद लिखित मामले में कोई ग्रौद्योगिक विवाद है;

ग्रौर चूंकि हरियाणा के राज्यपाल विवाद को त्यायिन्णिय हेतू निर्दिष्ट करना बांछनीय समझते हैं;

इस लिए, ग्रब, ग्रौद्योगिक विवाद ग्रिधिनियम, 1947 की धारा 10 की उपधारा (1) के खण्ड (ग) द्वारा प्रदान की गई शक्तियों का प्रयोग करते हुये, हरियाणा के राज्यपाल इसके द्वारा सरकारी ग्रिधिस्चना सं. 3 (44) 84-3-श्रम, दिनांक 19 ग्रप्रैल, 1984 द्वारा उक्त ग्रिधिनियम की धारा 7 के ग्रिधीन गठित श्रम न्यायालय, ग्रम्बाला को विवादग्रस्त या उससे संबंधित नीचे लिखा मामला न्याय-निर्णय के लिये निर्दिष्ट करते हैं, जो कि उक्त प्रबन्धकों तथा श्रमिक के बीच या तो विवादग्रस्त मामला है या विवाद से सुसंगत ग्रथवा संबंधित मामला है:---

क्या श्री हरदेव कुमार, की सेवाग्रों का समापन न्यायाचित तथाठीक है ? यदि नहीं तो वह किस राहत का हकदार है ?

संब्योविक (एफव्डीव) 125-84/26698.—चूंकि हरियाणा के राज्यपाल की राये है कि मैंवन क्लाक सर्विस, डी-4, नेहरु ग्राउन्ड, एन प्राई.टी., करीदाबाद के श्रीम्क श्री बाबू लाल तथा उसके प्रबन्धकों के मध्य इसमें इसके बाद लिखित मामले में कोई ग्रीशोगिक विवाद है;

ग्रीर चूंकि हरियामा के राज्यमाल विवाद को न्यायनिर्णय हेतू निर्दिष्ट करना वांछनीय समझते हैं।

इस लिए, अन औद्योगिक विनाद अधिनियम, 1947 की धारा 10 की उपधारा (1) के उपखण्ड (ग) द्वारा प्रदान की गई शक्तियों का प्रयोग करते हुये, हरियाणा के राज्यपाल इसके द्वारा सरकारी अधिसूचना सं. 5415-3-श्रम-68/15254, दिनांक 20 जून, 1968 के साथ पड़ने हुये अधिसूचना सं. 11495-जी-श्रम/57/11245, दिनांक 7 फरवरी, 1958 द्वारा उक्त अधिनियम की धारा 7 के अधीन गठित श्रम व्यायालय, फरीदाबाद को विवादगस्त या उससे सुसंगत या उससे सम्बन्धित नीचे लिखा मामला न्यायनिर्णय के

लिए निर्दिष्ट करते हैं, जो कि उक्त प्रबन्धकों तथा श्रमिक के बीच या तो विवादग्रस्त मामला है या विवाद से सुसंगत ग्रथवा संबंधित मामला है :--

क्या श्री बाबू लाल की सेवाग्रों का समापन न्यायोचित तथा ठीक है ? यदि नहीं तो वह किस राहत का हकदार है ?

संबद्योविव /ग्रम्बाला / 98-84 / 26705. — चूंकि हरियाणा के राज्यपाल की राये है कि मैं बलबेहड़ा को -ग्रोप्रेटिव केडिट एण्ड सर्विस सोसाइटी लिव, बलबेहड़ा, तहसील गुहल्ला, जिला कुरुश्रेव के श्रमिक श्री फकीर चन्द तथा उसके प्रबन्धकों के मध्य इसमें इसके बाद लिखित मामले में कोई ग्रौद्योगिक विवाद है: —

ग्रौर चूंकि हरियाणा के राज्यपाल विवाद को न्यावितर्भव हेतू निर्दिष्ट करना वांछनीय समझते हैं:--

इस लिए, अब, अौद्योगिक विवाद अधिनियम, 1947 की धारा 10 की उपधारा (1) के खण्ड (ग) द्वारा प्रदान की गई शक्तियों का प्रयोग करते हुये, हरियाणा के राज्यपाल इसके द्वारा सरकारी अधिसूचना सं. 3 (44) 84-3-श्रम दिनांक 19 अप्रैल, 1984 द्वारा उक्त अधिनियम की धारा 7 के अधीन गठित श्रम न्यायालय अन्वाया को विवाद प्रस्त या उससे संबंधित नीचे लिखा मामला न्यायनिर्णय के लिए निर्दिष्ट करते हैं, जो कि उक्त प्रबन्धकों तथा श्रमिक के बीच या तो विवाद प्रस्त मामला है या विवाद से सुसंगत अथवा संबंधित मामला है।

क्या श्री फकीर चन्द की सेवाश्रों का समापन न्यायाचित तथा ठीक है। यदि नहीं तो वह किस राहत का हकदार है ?

संग्रो विविश्यम्बाला 40-84 26711 — चूंकि हरियाणा के राज्यपाल की राये है कि (1) सचिव, हरियाणा राज्य बिजली बोर्ड, चण्डीगढ़ (2) कार्यकारी अभियन्ता, हरियाणा राज्य बिजली बोर्ड, शाहबाद मारकण्डा (कुरुक्षेत्र) के श्रमिक श्री पाला राम तथा उसके प्रबन्धकों के मध्य इसमें इसके बाद लिखित मामले में कोई श्रीद्योगिक विवाद है:—

ग्रौर चूंकि हरियाणा के राज्यपाल विवाद को न्यायनिर्णय हेतू निर्दिष्ट वांछनीय समझते हैं:--

इस लिए, ग्रज, ग्रौद्योगिक विवाद ग्रिधिनियम, 1947 की धारा 10 की उपधारा (1) के खण्ड (ग) द्वारा प्रदान की गई शक्तियों का प्रयोग करते हुये, हरियाणा के राज्यपाल इसके द्वारा सरकारी ग्रिधित्वना सं 3(44)84-3-श्रम दिनांक 19 ग्रप्रैल, 1984 द्वारा उक्त ग्रिधिनियम की धारा 7 के ग्रिजीन गठित श्रम न्यायालय ग्रिका की विवादग्रस्त या उससे मंबंधित नीचे लिखा मामला न्यायिनर्णय के लिये निर्दिष्ट करते हैं, जो कि उक्त प्रबन्धकों तथा श्रमिक के बीच या तो विवादग्रस्त मामला है या विवाद से सुसंगत ग्रथवा संबंधित मामला है।

क्या श्री पाला राम की सेवाओं का समापन न्यबोाचित तथा ठीक है? यदि नहीं तो वह किस राहत का हकदार है?

सं०ग्रो०वि०/एफ०डी०/308-84/26718.—-बूंकि हरियाणा के राज्यपाल की राये है कि (1) मैं० श्री जगदीश ठेकेदार, प्रकाश एग्रो इण्डस्ट्रीज, प्लाट तं० 311, सैक्टर-24, फरीदाबाद, (2) मैंसर्ज दीपक इन्जीनियरिंग वर्कस, 3/136, शास्त्री नगर, पुराना फरीदाबाद के श्रीसक श्री बलवीर सिंह तथा उसके प्रबन्धकों के मध्य इसमें इसके बाद लिखित मामले में कोई ग्रौद्योगिक विवाद है।

श्रौर चूंकि हरियाणा के राज्यपाल विवाद की न्यायनिर्णय हेतू निर्दिष्ट करना वांछनीय समझते हैं।

इस लिए, स्रब, सौद्योगिक विवाद स्रिधिनियम, 1947 की धारा 10 की उपधारा (1) के \_खण्ड (ग) द्वारा प्रदान की गई शिक्तियों का प्रयोग करते हुँये, हरियाणा के राज्यशल इसके द्वारा सरकारी स्रिधिसूचना सं० 5415-3-श्रम-68/15254 दिनांक 20 जून, 1968 के साथ पढ़ते हुये स्रिधिसूचना सं० 11495-जी-श्रम/57/11245 दिनांक 7 फरवरी, 1958 द्वारा उक्त स्रिधिनियम की धारा 7 के स्रियोग गठित श्रम न्यायालय करीदाबाद को विवादग्रस्त या उत्तरे सुसंगत या उससे सम्बन्धित नीचे लिखा मामला न्यायनिर्णय के लिये निर्दिष्ट करते हैं, जो कि उक्त प्रबन्धकों तथा श्रीमक के बीच या तो विवादग्रस्त मामला है या विवाद से सुसंगत स्थवा संबंधित मामला है :--

क्या श्री बलकीर सिंह की से बाग्रों का समायन न्यायीचित तथा ठीक है? यदि नहीं तो वह किस राहत का हकदार है?

सं०ग्रो०वि०/एफ०डी०/113-84/26726.—चूंकि हरियाणा के राज्यपाल की राये है कि मै० पी०एच० फोर्राजिज, प्लाट, नं० 300-301, सैक्टर-24, फरीदाबाद के श्रमिक श्री साधू सिंह तथा उसके प्रबन्धकों के मध्य इसमें इसके बाद निखित मामले में कोई ग्रौद्योगिक विवाद है।

स्रौर चूंकि हरियाणा के राज्यपाल विवाद को त्यायनिर्णय हेत् निर्दिष्ट करना वांछनीय समझते हैं।

इस लिए, ग्रब, ग्रौद्योगिक विवाद ग्रधिनियम, 1947 की धारा 10 की उपधारा (1) के खण्ड (ग) द्वारा प्रदान की गई शक्तियों का प्रयोग करते हुये, हरियाणा के राज्यपाल इसके द्वारा सरकारी ग्रधिसूचना सं 5415-3-श्रम-68/15254 दिनांक 20 जून, 1968 के साथ पढ़ते हुये अधिसूचना सं० 11495-जी-श्रम/57/11245 दिनांक 7 फरवरी, 1958 द्वारा उक्त अधिनियम की धारा 7 के अधीन श्रम गठित न्यायालय फरीदाबाद को विवादग्रस्त या उससे सुसंगत या उससे संबंधित नीचे लिखा मामला न्यायिनण्य के लिए निर्दिष्ट करते हैं, जो कि उक्त प्रबन्धकों तथा श्रमिक के बीच या तो विवादग्रस्त मामला है या विवाद से सुसंगत अथवा संबंधित मामला है।

क्या श्री साधू सिंह की सेवाग्रों का समापन न्यायोचित तथा ठीक है? यदि नहीं तो वह किस राहत का हकदार है?

संज्ञो वि०/एफ बी०/113-84/26733.— चूंकि हरियाणा के राज्यपाल की राये है कि मैं० पी०एच० कोर्राज्यज्ञ, प्लांट नं० 300-301, सैक्टर-24, फरीदाबाद के श्रमिक श्री देव नारायण तथा उसके प्रबन्धकों के मध्य इसमें इसके बाद लिखित मामले में कोई श्रीद्योगिक विवाद है।

श्रीर चंकि हरियाणा के राज्यपाल विवाद को न्यायनिर्णय हेत् निर्दिष्ट-करना वांछनीय समझते हैं।

इस लिए, अब, अौद्योगिक विवाद अधिनियम, 1948 की धारा 10 की उपधारा (1) के खण्ड (ग) द्वारा प्रदान की गई शिवलयों का प्रयोग करते हुये, हरियाणा के राज्यपाल इसके द्वारा सरकारी अधिसूचना सं० 5415-3-अम-68/15254 दिनांक 20 जून, 1968 के साथ पढ़ते हुये अधिसूचना सं० 11495-जी-अम/57/11245 दिनांक 7 फरवरी, 1958 द्वारा उक्त अधिसूचना की धारा 7 के अधीन गठित अम न्यायालय फरीदाबाद को विवाद प्रस्त या उससे सुसंगत या उससे संबंधित नीचे लिखा मामला न्याय-निर्णय के लिये निर्दिष्ट करते हैं, जो कि उक्त प्रबन्धकों तथा अमिक के बीच या तो विवाद प्रस्त मामला है या विवाद से सुसंगत अथवा संबंधित मामला है:-

क्या श्री देव नारायण की सेवाग्रों का समापन न्यायोचित तथा ठीक है? यदि नहीं तो वह किस राहत का हकदार है?

सं श्रो विव /एफ बी । 113-84/26740 -- चूकि हरियाणा के राज्यपाल की राये है कि मैं पी. एच. फोरजिंग्ज, प्लाट नं व 300-301, सैंक्टर-24, फरीदाबाद के श्रमिक श्री रिवन्द्र प्रसाद तथा उसके प्रवन्धकों के मध्य इसमें उसके बाद लिखित मामले में कोई ग्रौद्योगिक विवाद है ।

श्रीर चूंकि हरियाणा के राज्यपाल विवाद को न्यायनिर्णय हेतू निर्दिष्ट करना वाछंनीय समझते हैं।

इस लिए, ग्रब, ग्रौद्योगिक विवाद ग्रिधिनियम विवाद 1947 की धारा 10 की उपधारा (1) के खण्ड (ग)द्वारा प्रदान की गई शिक्तियों का प्रयोग करते हुए, हरियाणा के राज्यपाल इसके द्वारा सरकारी, ग्रिधिसूचना सं. 5415-3 श्रम-/15254 दिनांक 20-6-68 के साथ पढ़ते हुए, ग्रिधिसूचना सं० 11495-जी-श्रम/57/11245 दिनांक 7-2-58 द्वारा उक्त ग्रिधिनियम की धारा 7 के ग्रिधीन गठित श्रम न्यायालय फरीदाबाद को विवादग्रस्त या उससे सुसंगत या उससे सम्बन्धित नीचे लिखा मामला न्यायनिर्णय के लिए निर्दिष्ट करते हैं, जो कि उक्त प्रवन्धकों तथा श्रमिक के वीच या तो विवादग्रस्त मामला है या विवाद से सुसंगत ग्रथवा संबधित मामला है:-

क्या श्री रिवन्द्र प्रसाद की सेवांग्रों का समापन न्यायोचित तथा ठीक है ? यदि नहीं, तो किस राहत का हकदार है ?

सं गो विव /एफ डी /63-84/26747. चूर्कि हरियाणा के राज्यपाल की राये है कि मैं ग्रायुष इण्डस्ट्रीज, प्लाट नं 207, सैक्टर 24, फरिदाबाद, के श्रमिक श्री जनार्धन सिंह तथा उसके प्रबन्धकों के मध्य इसमें उसके बाद लिखित मामले में कोई श्रीद्योगिक विवाद है।

ग्रौर चूं कि हरियाणा के राज्यपाल विवाद को न्यायनिर्णय हेतू निदिष्ट करना वाछंनीय समझते हैं।

इस लिए, अब औद्योगिक विवाद अधिनियम 1947 की धारा 10 की उपधारा (1) के खण्ड (ग) द्वारा प्रदान की गई शक्तियों का प्रयोग करते हुए हरियाणा के राज्यपाल इसके द्वारा सरकारी अधिस्चना से 5415-3-श्रम-68/15254 दिनांक 20-6-68 के साथ पढ़ते हुए अधिस्चना सं 11495-जी-श्रम/57/11245 दिनांक 7-2-58 द्वारा उक्त अधिनियम की धारा 7 के अधीन गठित श्रम न्यायालय फरीदाबाद, को विवादग्रस्त या उससे सुसंगत या उससे सम्बन्धित नीचे लिखा मामला न्यायनिर्णय के लिए निर्दिष्ट करते हैं, जो कि उक्त प्रबन्धकों तथा श्रमिक के बीच या तो विवादग्रस्त मामला है या विवाद से सुसंगत अथवा संबधित मामला है :-

वया श्री जनार्धन सिंह की सेवांग्रों का समापन न्यायोजित तथा ठीक है ? यदि नहीं, तो वह किस राहत का हकदार है ?